International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

राजनीतिक संस्कृति की अवधारणाः एक आलोचनात्मक विष्लेषण

डॉ. नौमी प्रिया

असि. प्रो. (समाजषास्त्र)
राजकीय महाविद्यालय, सम्भल

मानव भी पषु जगत का एक प्राणी है, लेकिन वह अन्य प्राणियों से भिन्न है। इस भिन्नता का शारीरिक आधार के साथ-साथ सांस्कृतिक आधार भी है, जो महत्वपूर्ण है। तथ्य तो यह है कि संस्कृति ही वह तत्व है जो मानव को पषु जगत का सर्वाधिक विकसित प्राणी के रूप में स्थापित करता है। जहाँ अन्य प्राणी लाखों हजारों वर्ष पूर्व जिन स्थितियों में जिस तरह रह रहे थे वे लगभग आज भी वैसे ही रह रहे है। लेकिन मानव ने सभ्यता एवं संस्कृति के माध्यम से उन परिस्थितियों में परिवर्तन करता रहा। यही कारण है कि वह आज प्राणी जगत का मात्र एक सदस्य नहीं बल्कि उसका स्वामी बन बैठा है। राजनीतिक संस्कृति मूल संस्कृति का ही एक भाग है, जिसका प्रयोग राजनीतिक जीवन शैली को समझने के लिए किया जाता है। किसी भी राजनीतिक व्यवस्था की कार्य प्रणाली को समझने के लिए उसके राजनीतिक संस्कृति को समझना आवष्यक है। परम्परागत राजनीतिषास्त्र में जिसे राष्ट्रीय चरित्र, राष्ट्रीय लोकाचार, राजनीतिक विचारधार, राष्ट्रीय राजनीतिक मनोविज्ञान, जनता का राजनीतिक दृष्टिकोण कहा जाता था उसे ही आधाुनिक शब्दों में वर्तमान में राजनीतिक संस्कृति कहा जाता है। यह अवधारणा पूर्व में प्रयुक्त किये गये सभी षब्दावली से अधिक व्यापक एवं समावेषी है, क्योंकि इसमें नेतृत्व एवं जनता दोनों के राजनीतिक अभिविन्यास सम्मिलित है। दूसरे षब्दों में कहा जा सकता है कि राजनीतिक संस्कृति राजनीतिक समाजषास्त्र में राजनीतिक विचारधारा, वैधानिकता स्वयतत्ता, राष्ट्रीयता तथा विधि के शासन जैसे परम्परागत विषयों के अध्ययन के लिए एक नया व्यवहारिक विश्लेषण है। इसलिए राजनीतिक संस्कृति को सहीं अर्थो में समझने के लिए सबसे पहले संस्कृति के अर्थ को समझना होगा।

संस्कृति को विभिन्न समाजषास्त्रियों ने अपने-अपने ढ़ग से परिभाषित करने का प्रयास किया है। हर्षकोविट्स ने संस्कृति का बहुत ही संक्षिप्त परिभाषा देते हुए कहा है- "संस्कृति मानव निर्मित पर्यावरण है।" इसका तात्पर्य यह है कि मानव दो तरह के पर्यावरण में निवास करता है। प्रथम प्राकृतिक पर्यावरण एवं द्वितीय मानवनिर्मित पर्यावरण। मानव प्राकृतिक तत्वों के सहयोग से जिन भी आवष्यकताओं की पूर्ति हेतु वस्तुओं, विचारों, प्रथा-परम्पराओं का निर्माण किया है वे सभी संस्कृति के अंग है। ई.वी. टायलर1 ने संस्कृति को परिभाषित करते हुए लिखा है "संस्कृति एक जटिल समग्र है, जिसमें ज्ञान विष्वास, कला, अचार्य, विधि, प्रथा और ऐसे ही अन्य आदतों एवं क्षमताओं का समावेष है जिसे मानव समाज के एक सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है।" इसी प्रकार राबर्ट वीरस्टीड2 ने संस्कृति के बारे में लिखा है कि "संस्कृति के अंतर्गत वे सभी वस्तुएँ सम्मिलित है जिन पर हम विचार करते हैं कार्य करते हैं तथा समाज का सदस्य होने के नाते अपने पास रखते हैं।"

मैकाइवर एवं पेज3 के अनुसार- "संस्कृति हमारे दिन प्रतिदिन के रहन-सहन की प्रकृति, साहित्य, धर्म, कला, मनोरंजन तथा उपभोग के बारे में हमारी अभिव्यक्त है।"

उक्त सभी परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि मानव समाज के एक सदस्य के रूप में समाज द्वारा मान्यता प्राप्त जिन भी विचारो, मूल्यों, वस्तुओं को स्वीकार करता है एवं आचरण में लाता है वे सभी संस्कृति के अंग माने जाते है। संस्कृति की आवधारणा को और भी स्पष्ट रूप से समझने के लिए इनकी विषेषताओ का निम्न रूप में उल्लेख करना आवष्यक हो जाता है-

1. संस्कृति मानव द्वारा निर्मित है।
2. सस्कृति मानव द्वारा सीखा हुआ व्यवहार है।
3. संस्कृति हस्तांतरित किया जाता है।
4. संस्कृति में सामूहिकता का भाव होता है।
5. संस्कृति में मानव आवष्यकताओं की पूर्ति का गुण होता है।

6. संस्कृति अपने समूह के लिए आदर्ष होती है।
7. संस्कृति में अनुकूलन का गुण होता है।
8. संस्कृति में भौतिक तथा अभौतिक दोनों तत्व सम्मिलित होते है।
9. प्रत्येक समाज की संस्कृति की अपनी विषिष्टता होती है।
10. संस्कृति अति-वैयक्तिक तथा अति-अवयव होती है।

उक्त विषेषताओं के आधार पर कहा जा सकता है कि संस्कृति में वे सभी भौतिक एवं अभौतिक तत्व निहित होतें हैं, जिसे कोई समाज अपनी आवष्यकताओं की पूर्ति के लिए विकसित करता है।

संस्कृति के अर्थ को समझने के पष्चात् राजनीतिक संस्कृति को समझना सरल हो जाता है। राजनीतिक संस्कृति सामान्य संस्कृति का ही एक अभिन्न अंग है, जो राजनीतिक व्यवस्था के प्रति लोगों के विचारों, विष्वासों, अभिवृतियों, मूल्यों एवं व्यवहार प्रतिमान को प्रदर्षित करता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि राजनीतिक व्यवस्था एवं संस्कृति सम्बंधित लोगों के दृष्टिकोणों, विष्वासों, भावनाओं, विचारों एवं व्यवहार करने के तरीकों के सम्मिलित रूप है। राजनीतिक संस्कृति को परिभाषित करते हुए पाई एवं वर्बा ने लिखा है "राजनीतिक संस्कृति राजनीति के प्रति व्यक्त की जाने वाली प्रतिक्रियाओं का अभिविन्यास या अनुभवातीत विष्वासो, व्यक्त प्रतिकों एवं मूल्यों की पद्धति कहा है, जिसके माध्यम से उन परिस्थितियों को परिभाषित किया जाता है, जिनके अंतर्गत राजनीतिक क्रियाओं की उत्पत्ति होती है।"

लूसियन पाई5 के शब्दों में - "राजनीतिक संस्कृति अभिवृत्तियों, विष्वासों, एवं मनोभावों का कुलक है, जो राजनीतिक क्रियाओं को अर्थ एवं सुव्यवस्था प्रदान करता है तथा राजनीतिक व्यवस्था में व्यवहार को नियंत्रित करने वाली अतंर्निहित पूर्व धारणाओं एवं नियमों को बताता है।" इसमें राजनीतिक व्यवस्था के राजनीतिक आदर्ष तथा क्रियाषील मान्यताएँ दोनों ही षामिल है। अतः राजनीतिक संस्कृति राजनीति के मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारपरक पहलूओं का समुचित प्रकारों में अविर्भाव है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर राजनीतिक संस्कृति की कुछ विषेषताओं का उल्लेख किया जा सकता है:-
1. राजनीतिक संस्कृति एक अभूर्त अवधारणा है।
2. राजनीतिक संस्कृति में अनेक तत्वों एवं उपादानों का समन्वय है।
3. राजनीतिक संस्कृति गतिषील होती है।
4. राजनीतिक संस्कृति अनुभविक विष्वास पर आधारित होता है।
5. राजनीतिक संस्कृति में मूल्य व मान्यता निहित है।
6. राजनीतिक संस्कृति की अभिव्यक्ति प्रभावी अनुभाविक प्रक्रियाओं के द्वारा की जाती है।
7. राजनीतिक संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ एवं मनोवैज्ञानिक आयामों की सामूहिक अभिव्यक्ति है।

उक्त विषेषताओं के आधार पर ही राजनीतिक संस्कृति की प्रकृति को विभिन्न समाज वैज्ञानिकों ने अपने-अपने शब्दावली में व्यक्त किया है। उदाहरणार्थ आमण्ड एवं पावेल ने इसे "कार्य के प्रति अभिमुखीकरण, डेविड ईस्टन ने इसे राजनीतिक पर्यावरण तथा स्पैरो ने इसे राजनीतिक शैली की संज्ञा दिया है। वही वियरस्टीड ने इसे राजनीतिक संस्कृति कहा है।
राजनीतिक संस्कृति के आधार - प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था की अपनी राजनीतिक संस्कृति होती है, क्योंकि राजनीतिक संस्कृति का विकास उस देष के काल और परिस्थितियों के अनुरूप होता है। राजनीतिक संस्कृति के विकसित होने के निम्न प्रमुख आधार है:-

1. ऐतिहासिक आधार- इतिहास राजनीतिक संस्कृति का सर्वप्रमुख आधार है। राजनीतिक संस्कृति के निर्माण एवं विकास में ऐतिहासिक घटनाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रत्येक देष की ऐतिहासिक घटनाएँ, वहाँ की राजनीतिक संस्कृति की प्रकृति निर्धारित करती है। जैसा कि डी. टाँसन ने लिखा है "ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से फ्रांस हमेषा भिन्न उदाहरण पेष करता रहा है। 1789 की क्रांति ने उस समय की राजनीतिक संस्थाओं को एक ही झटके में उखाड़ फेका। हम कह सकते है कि राजनीतिक संघर्ष, प्रतिद्वंद्वी आंदोलन, अधिकांषतः उस क्रांतिकारी परिवर्तन से निर्मित मनोवृतियों, मूल्यों तथा विष्वासों द्वारा निष्चित किये गये।" भारतीय संस्कृति पर भी विदेषी आक्रमणकारियों एवं ब्रिटिष शासन का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।
2. भौगोलिक आधार:-किसी भी देष की राजनीति संस्कृति को वहाँ की भौगोलिक स्थिति प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। भौगोलिक स्थिति के कारण देष की सुरक्षा एवं असुरक्षा का भाव उत्पन्न होती है। यदि भौगोलिक दृष्टि से देष की सीमाएँ सुरक्षित है। तो वहाँ की राजनीतिक संस्कृति उन देषों से भिन्न होगी जहाँ कि सीमाएँ भौगोलिक दृष्टिकोण से असुरक्षित हैं।

भौगोलिक स्थिति के कारण राजनीतिक स्थिरता व अंतराष्ट्रीय सम्बंध प्रभावित होते है। उदाहरण के लिए इंगलैण्ड एक द्वीप होने के कारण बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित रहा है। विभाजन के पूर्व भारत की भौगोलिक स्थिति वर्तमान की तुलना में अधिक सुरक्षित थीं। वर्तमान में पाकिस्तान की गतिविधियों से भारत चिंतित रहता है और इसकी आंतरिक तथा विदेषी नीति प्रभावित होते है।

3. नृजातीय भिन्नता:- किसी देष की राजनीतिक संस्कृति इस बात पर भी निर्भर करती है कि वहाँ कितनी नृजातीय सामनता या भिन्नताएँ है। सामान्यतः नृजातीय समानता वाले देष में राष्ट्रीयता का विकास उन देषों के तुलना में अधिक होती है, जहाँ नृजातीये भिन्नताएँ होती है। समरूप नृजातियता के कारण उनमें हम की भावना विकसित होती है जो राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए महत्वपूर्ण है। दूसरी ओर नृजातीय विभिन्नता के कारण विभिन्न नृजातिय समूहों की निष्ठाएँ, राष्ट्रीय हितों की तुलना में सजातीय हितों पर केन्द्रित होती है, जिससे राष्ट्रीयता की भावना प्रभावित होती है और कभी-कभी राष्ट्रीय अखण्डता खतरे में हो जाती है। भारत इसका ज्वलंत उदाहरण है। यद्यपि भारत में विविधता में एकता पाई जाती है। फिर भी कभी-कभी नृजातिय विभिन्नता के कारण अलगाववादी शक्तियाँ सिर उठाने लगती है। यह नृजातिय विभिन्नता धर्म, जाति-प्रजाति किसी भी आधार पर हो सकता है।

सामाजिक-आर्थिक संरचना - किसी भी देष की राजनीतिक संस्कृति वहाँ की सामाजिक आर्थिक संरचना पर निर्भर करती है। यदि किसी देष की सामाजिक-आर्थिक संरचना, समानता पर आधारित है तो वहाँ शांति, सुव्यवस्था एवं प्रगति की सम्भावनाएँ अधिक होगी और राजनीतिक स्थिरता बनी रहने की सम्भावना प्रबल होगी। देषवासियों के बीच भाईचारा की संभावना अधिक होगी। ऐसे देषों में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली सफल होने की सम्भावना भी अधिक होगी। साथ ही षोषण-दमन एवं अन्याय कम होगा। दूसरी और जिन समाजों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति विषमतापूर्ण होगी वहांॅ लोगों के बीच आपसी तनाव व संघर्ष अधिक होगा तथा राजनीतिक व्यवस्था पक्षपातपूर्ण व दमनकारी होगी। देष ंके अंदर वर्गीय संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी, क्योंकि विषमता मूलक समाज में देषहित से महत्वपूर्ण वर्गीय हित हो जाता है। ऐसे समाजों में लोकतांत्रिक मूल्यों, समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व एवं न्याय में ह्रास देखा जा सकता है। ऐसे देषों में राजनीतिक अस्थिरता व षासन मे अधिनायकवाद के तत्व सक्रिय हो जाते है।

विचारधाराएँः- राजनीतिक संस्कृति के निर्माण में वहां की राजनीतिक विचारधाराएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यद्यपि कुछ विद्वानों का मत है कि- "विचारधारा और राजनीतिक संस्कृति को विभाजित करने वाली रेखा अत्यंत पतली है।7 विचारधारा के कारण ही नाजीवाद, फांसीवाद, साम्यवाद, समाजवाद, पूँजीवाद जैसी राजनीतिक संस्कृतियाँ विकसित होती है। धार्मिक विचारधारा के आधार पर धार्मिक राष्ट्र या धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र की संकल्पना विकसित हुई।
सामान्य संस्कृतिः- किसी भी देष की राजनीतिक संस्कृति पर वहाँ की सामान्य संस्कृति का व्यापक असर पड़ता है, क्योंकि राजनीतिक संस्कृति सामाजिक संस्कृति का ही एक अंष मात्र होता है। यदि किसी समाज के संस्कृति में समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व एवं न्याय के तत्व होगें तो निष्चित रूप से वहाँ लोकतांत्रिक संस्कृति का विकास होगा और यदि किसी देष की सामान्य संस्कृति भेद-भाव, विषमता, शोषण-दमन पर आधारित है तो वहाँ राजनीतिक उथल-पुथल व सामंतषाही, राजषाही प्रकृति की राजनीतिक संस्कृति विकसित होने की सम्भावना अधिक होगी।

अभिजन तथा आमजन की स्थितिः- तथ्य तो यह है कि राजनीतिक संस्कृति के निर्माण में वहाँ के अभिजन की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। यदि देष का अभिजन सामान्यजनों के प्रति सहानुभूति एवं समन्वय स्थापित करने वाली होती है तो वहाँ राजनीतिक संस्कृति में स्थिरता एवं निरंतरता बनी रहती है। दूसरी ओर यदि अभिजन वर्ग स्वार्थी व सामान्यजन से घृणा करने वाले होतें हैं तो वहाँ राजनीतिक सम्बंध अस्थिर, अविष्वास एवं संघर्ष को बढ़ावा देती है।
राजनीतिक संस्कृति कोई स्थिर अवधारणा नहीं है अपितु इनमें समय-समय पर परिवर्तन होते रहते है। इसकी अभिव्यक्ति कुछ प्रतीकों के माध्यम से की जाती है। उदाहरण के लिए राष्ट्रगान, राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय चिन्ह इत्यादि।

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि राजनीतिक संस्कृति के अंतर्गत वे समस्त आयाम आते है, जो किसी देष के राजनीतिक व्यवस्था के संचालन में आवष्यक होते है। लेकिन राजनीतिक संस्कृति की आवधारणा पर कुछ समाज वैज्ञानिकों ने आरोप लगाये है कि राजनीतिक संस्कृति एक अस्पष्ट अवधारणा है, जिसका कोई सामान्य संकेतक या पद्धति नहीं है। जैसा कि आमंण्ड एवं पावेल ने लिखा है- न तो अमेरिका के राजनीतिक संस्कृति के विष्लेषण से ली-हारवे ओसवाल्ड के आचरण का पता लगाया जा सकता और नहीं घाना की राजनीतिक संस्कृति से एन्क्रूमा के राजनीतिक आचरण की व्याख्या की जा सकेंगी। राजनीतिक संस्कृति की व्याख्या का आधार वैज्ञानिक नहीं है जैसा कि डेविस एवं लेविस ने कहा- "राजनीतिक संस्कृति की आवधारणा भूतकाल में प्रयोग किये जाने वाले शब्दावली' जैसे राजनीतिक मनोवृति, राजनीतिक मूल्य, विचारधाराएँ, राष्ट्रीय

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

चरित्र, सांस्कृतिक आचार एवं संस्कारों के लिए मात्र एक शीर्षक ढूंढने का प्रयत्न है।" उन्होंने आगे कहा "राजनीतिक संस्कृति' की संकल्पना कठिनाइयों और जटिलता को बढ़ाने वाला प्रयास है।"

राजनीतिक संस्कृति की आलोचना के बावजूद राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा के महत्व को नकरा नहीं जा सकता जैसा कि ऐरिक रोवे ने लिखा है - "राजनीतिक व्यवहार का आधार राजनीतिक संस्कृति ही होता है।" अतः किसी देष की समाज व्यवस्था एवं राज्य प्रणाली को समझने के लिए राजनीतिक संस्कृति को समझना आवष्यक है। राजनीतिक संस्कृति की संकल्पना के महत्व को निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता हैः-

(1) राजनीतिक संस्कृतिक की संकल्पना राजनीतिक सिद्धांत वृहत एवं लघु की खाई को कम करती है।
(2) राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा से लोगों की राजनीति के प्रति अस्था और विष्वास को समझा जा सकता है।
(3) राजनीतिक संस्कृति के माध्यम से किसी देष की सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था का व्यवहारवादी द्दष्टिकोण को समझा जा सकता है।
(4) राजनीतिक संस्कृति की आवधारण ने राजनीति को जीवन के अन्य आयामों यथा सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक तत्वों को समन्वित कर दिया है।
(5) राजनीतिक संस्कृति से राजनीतिक विकास को समझा जा सकता है तथा राजनीति में बौद्धिक व अबौद्धिक तत्वों में अंतर कर सकते है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राजनीतिक संस्कृति की आवधारणा ने राजनीतिक व्यवहार की गतिषीलता को समझने में मदद की है। जो कि व्यवहार वादी उपागम की आवष्यकता है।

संदर्भ

1. ई.वी. टायलर, दि ऑरिजिन्स ऑफ कल्चर, न्यूयार्कः हार्पर एण्ड रो, 1958, पृष्ठ 1
2. राबर्ट वीरस्टीड, दि सोषल आर्डर, बम्बई,: टाटा मेग्राहिल पब्लिषिंग कम्पनी, 197., पृष्ठ 1.6,
3. मैकाइवर, एण्ड पेज, सोसाइटी, लंदन: दि मैकमिलन एण्ड कम्पनी लि., 1961, पृष्ठ 499
4. लूसियन पाई एवं सिडनी वर्बा, पोलिटिकल कल्चर एण्ड पोलिटिकल डेवलपमेंट, प्रिंसटन, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1966 पृ. 513
5. लूसियन पाई, आस्पेक्स ऑफ पोलिटिकल डेवलपमेंट, न्यू देहली अमेंरिंडा पब्लिषिंग कम्पनी, प्रा. लि., 1972, पृष्ठ 1.4-1.5,
6. डी. टाम्सॅन-डेमोक्रेसी इन फ्रांस ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस लंदन, 1952 पृ. - 16
7. ऐलेन आर बॉल, मॉर्डन पोलटिक्स एण्ड गर्वनमेंट, लंदन, मैकमिलन 1971, पृ. 56
8. डेविस एण्ड लेविस-मॉडल्स ऑफ पॉलिटिकल सिस्टम, विकास पब्लिकेषन, दिल्ली, 1971, पृ. 115